जिंदगी की लम्बाई नहीं बल्कि गहराई मायने रखती है।
– अज्ञात

कोरोना बहुत बड़ी चुनौती

कोरोना से मरने वालों की संख्या भी 20 हजार की रेखा पार कर चुकी है। महामारी के कुछ नए केंद्र इधर अचानक उभर आए हैं। बेंगलुरु में पिछले चार–पांच दिनों में नए संक्रमितों की संख्या रोज ब रोज बढ़ती जा रही है।

ममता राय।

कोरोना संक्रमितों की लगातार बढ़ती संख्या देश के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गई है। सात लाख से ज्यादा मामलों के साथ भारत कोरोना पीड़ितों के मामले में अमेरिका और ब्राजील के बाद दुनिया का तीसरा देश बन गया है। कोरोना से मरने वालों की संख्या भी 20 हजार की रेखा पार कर चुकी है। महामारी के कुछ नए केंद्र इधर अचानक उभर आए हैं। बेंगलुरु में पिछले चार–पांच दिनों में नए संक्रमितों की संख्या रोज ब रोज बढ़ती जा रही है।

तिरुवनंतपुरम में सरकार ने एक हफ्ते के लिए 'ट्रिपल लॉकडाउन' की घोषणा की है। गुवाहाटी में राज्य सरकार ने बीमारी के कम्यूनिटी स्तर पर पहुंचने की घोषणा कर दी है। इन सूचनाओं का यह मतलब न निकाला जाए कि हर मोर्चे पर हालात बिगड़ते ही जा रहे हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में स्थितियां बिगड़ने के बाद अब सुधार की ओर बढ़ रही हैं। 23 जून को दिल्ली में 24 घंटे में 3947 नए केस आए थे जो अब तक की सबसे बड़ी संख्या थी। उसके बाद 24, 25 और 26 जून को रोज तीन हजार से ऊपर केस आए। पर 27 जून से नए केसों की संख्या कम होने लगी और उसके बाद पूरे हफ्ते का दैनिक औसत 2494 रहा।

रविवार को यह संख्या और कम 2244 दर्ज की गई। मुंबई में भी हालात स्थिर करने में सफलता मिली है। वहां नए केस आने की संख्या घट नहीं रही तो बढ़ भी नहीं रही है। सबसे बड़ी बात यह कि कोरोना से मृत्यु दर भारत में आज भी काफी कम है। दुनिया में मृत्यु और संक्रमण का अनुपात 4.7 फीसदी है जबकि भारत में यह 2.8 फीसदी दर्ज किया गया है। इस बीच देश भर के स्वास्थ्यकर्मी जी–जान से मोर्चे पर डटे हुए हैं। मात्र दस दिनों के अंदर दिल्ली के छतरपुर में दुनिया का सबसे बड़ा कोरोना अस्पताल बन जाना और बाकायदा काम करना शुरू कर देना अपने आप में एक अजूबा है। लेकिन एक मोर्चा ऐसा भी है जिसपर हमारी कमजोरी विश्व स्तर पर चल रही कोरोना विरोधी लड़ाई में अलग से रेखांकित की जा रही है। यह है सूचनाओं की कमी। विशेषज्ञ महसूस कर रहे हैं कि भारत में कोरोना से जुड़ी सूचनाएं जितनी आसानी से मुहैया करवाई जानी चाहिए थीं, वह काम अभी नहीं हो रहा है। जैसे–जैसे हालात गंभीर होते गए, स्वास्थ्य विभाग की ओर से जारी बुलेटिन में सूचनाएं कम होती गईं। मरीजों की संख्या तो उसमें होती है लेकिन उम्र, क्षेत्र और मरीज की स्थिति आदि से जुड़े पर्याप्त ब्यौरे नहीं होते।

बुलेटिनों की संख्या कम होना और नियमित प्रेस कॉन्फ्रेंस बंद हो जाना भी इसी बात का संकेत माना गया कि सूचनाएं उपलब्ध कराने में सरकार की दिलचस्पी कम हो गई है। संभवतः इन्हीं वजहों से डब्ल्यूएचओ को कहना पड़ा कि भारत में कोरोना से जुड़े आंकड़ों को लेकर एक राष्ट्रीय गाइडलाइन जारी होनी चाहिए। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में इन सूचनाओं की भूमिका बहुत बड़ी हो सकती है, इसलिए सरकार को सूचनाओं का अबाधित प्रवाह हर हाल में सुनिश्चित करना चाहिए।

सहजीवी सद्भाव

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

शीओ बेंक्योके मृत्यु के पश्चात, क्योसे के लिए आंदोलन की गति धीमी हो गई। उनके बाद कुरोकावा कीशो ने इस अवधारणा को पुनर्जीवित किया। उन्होंने इसका सहजीवन के रूप में अनुवाद किया। सहजीवन एक जैविक शब्द है जो विपक्ष या टकराव की आशंका को जन्म देता है। कुरोकावा ने जोर दिया कि सहजीवन का तात्पर्य मात्र सह–अस्तित्व और समझौता नहीं है। यहां सहजीवन का अर्थ आपसी समझ और लेन–देन से संबंधित है क्योंकि मुक्ति के लिए एकांत खोज का कोई मतलब नहीं है और न ही भयंकर मुकाबले का कोई मतलब है जो एक उपभोक्तावादी समाज की विशेषता है। क्योसे की समकालीन अवधारणा, पूर्व की बौद्ध धर्म की प्रतीत्य समुत्पद या आश्रित उत्पत्ति सिद्धांत के साथ ही अन्योन्यया सभी जीवों के अन्योन्याश्रय से बहुत भिन्न है।

संपादकीय

सबके लिए चेतावनी

पूर्वी लद्दाख के सीमांत इलाके पर यदि चीन अपना कब्जा जमाए रखने में कामयाब हो गया तो छोटे देशों से लेकर यूरोप के ताकतवर देश भी उसका लोहा मानेंगे। इन देशों का शासक वर्ग अपनी सत्ता बचाने के लिए चीन की खुशामद करेगा। लेकिन भारत जिस तरह चीन को चुनौती दे रहा है वह विश्व समुदाय के लिए एक सबक है। आज का विश्व समुदाय यदि चीन की इन हरकतों को नजरअंदाज करता गया तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी दुनिया में चीन की तूती बोलेगी और अमेरिका तथा यूरोपीय ताकतें उसकी पिछलग्गू बनने को मजबूर होंगी। इसलिए चीन का पूर्वी लद्दाख की सीमाओं पर सैन्य अतिक्रमण केवल भारत के लिए चुनौती नहीं है। चीन की इस आक्रामक समर नीति को चुनौती देने के लिए ऑस्ट्रेलिया, जापान, भारत और अमेरिका ने एक चतुर्पक्षीय समूह (क्वाड्रीलैटरल ग्रुप) की स्थापना की है जिसने हिंद–प्रशांत इलाके में शांति और स्थिरता की बातें करते हुए चीन को बार–बार याद दिलाया है कि वह अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों का सम्मान करे। लेकिन इस चर्तुपक्षीय गुट ने चीन की दादागिरी को चुनौती देने के लिए कभी साझा तौर पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया। चीन के रणनीतिकारों को लगता है कि यह चतुर्पक्षीय गुट कागजी शेर है जो चीन के खिलाफ समुचित तौर पर दहाड़ने की भी हिम्मत नहीं कर सकता है। लेकिन अब इसमें कोई संदेह नहीं रह गया है कि क्षेत्र के ताकतवर देश एकजुट नहीं हुए तो चीन एक–एक कर सबको निगल लेगा। यह पूरी दुनिया की जनतांत्रिक ताकतों को आगाह कर रहा है कि चीन की दादागिरी रोकने के लिए वे आज भारत के साथ खड़ी दिखें।

मोदी ने चीन का नाम नहीं लिया था, इसके बावजूद दो घंटे के भीतर ही चीन ने इसका जवाब देते हुए कहा कि चीन ने 14 में से 12 देशों के साथ अपनी भौगोलिक सीमाएं तय कर ली हैं।

विस्तारवादी नजरिया

रंजीत कुमार।।

चीन को चीनी भाषा में 'चुंग क्वो' कहते हैं जिसका अर्थ होता है मध्य साम्राज्य यानी मिडल किंगडम। इस नाम के अनुरूप चीनी शासकों और लोगों में सदियों से यह मान्यता रही है कि उनका देश पृथ्वी के मध्य में स्थित है जहां से वे पूरी पृथ्वी पर राज करते हैं। प्राचीन काल में देशों की सीमाएं स्पष्ट निर्धारित नहीं होती थीं। इसलिए इनकी एकपक्षीय व्याख्या कर चीन अपनी सीमाओं का विस्तार करता रहा। आज भी वह जानबूझकर रखी गई इसी अस्पष्ट सीमा के बहाने अपनी सीमाओं का विस्तार करने से बाज नहीं आ रहा है।

बीते शुक्रवार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लेह में सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा कि विस्तारवाद का युग अब समाप्त हो गया है। मोदी ने चीन का नाम नहीं लिया था, इसके बावजूद दो घंटे के भीतर ही चीन ने इसका जवाब देते हुए कहा कि चीन ने 14 में से 12 देशों के साथ अपनी भौगोलिक सीमाएं तय कर ली हैं। चीन की बात का अर्थ यह था कि वह इतना यथार्थवादी और व्यावहारिक देश है, जिसने 14 पड़ोसियों में से 12 के साथ सीमा समझौते कर लिए और शांति से रह रहा है। केवल भारत और भूटान ही हैं जिनके साथ सीमाओं का

विवाद सुलझ नहीं पाया है। साफ है कि यही दो देश चीन की धौंस में नहीं आए। उसके बाकी 12 पड़ोसी देश मध्य एशिया, पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया के इलाकों के हैं जिनमें से कई सदियों से प्रभावशाली और सभ्यतागत ताकत रहे अपने विशालकाय पड़ोसी देश की छत्रछाया में जीते रहे हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि चीन वक्त आने पर कह दे कि वे सभी पड़ोसी देश जो कभी चीनी छत्रछाया में रहे हैं, चीन का ही भूभाग मान लिए जाएं।

इन देशों के लोगों में राष्ट्रवाद की चेतना जगी तब तक देर हो चुकी थी। चीन के करीबी रहे ऐसे इलाकों में आज का शिन्च्यांग (पूर्वी तुर्किस्तान), तिब्बत और भीतरी मंगोलिया शामिल हैं जिन पर पिछली दो शताब्दियों के दौरान चीन ने अपना नाजायज कब्जा जमाया है। इन इलाकों को छोड़ दिया जाए तो आज के चीन का भौगोलिक क्षेत्र एक तिहाई ही बचेगा। इनमें शिन्च्यांग का इलाका चीन के करीब छठे हिस्से (17 प्रतिशत) या भारत के आधे हिस्से के बराबर है। तिब्बत भी चीन का एक बड़ा इलाका बनता है जिसमें आज के तिब्बत के अलावा चीन के छिंगहाए और कानसू प्रांत भी शामिल हैं। चीन ने इन्हें आज के तिब्बत से काट कर अपने अलग प्रांत का दर्जा दे दिया है।

आधुनिक काल में चीन अफ्रीका, लातिन अमेरिका और यूरोप के दूर–दराज के देशों तक अपना आर्थिक विस्तार कर वहां अपना राजनीतिक और सामरिक दबदबा कायम करने की रणनीति पर चल रहा है। 2013 में सत्ता में आने के बाद से ही चीन के मौजूदा राष्ट्रपति शी चिन फिंग ने प्राचीन मान्यता के अनुरूप 'चाइना ड्रीम' का नारा दिया। चीन 2049 तक इस सपने को साकार करने का लक्ष्य लेकर चल रहा है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए ही उसने 2015 में वन बेल्ट वन रोड की महत्वाकांक्षी योजना लागू करनी शुरू की ताकि दुनिया के सभी मार्ग चीन तक जाएं।

अष्टयोग- 5108

7	6		4		3	5
2	28	4	33	7	35	4
1	2		6	4	7	
	28	3	38	6	34	
4	2		3		1	7
	31		31	1	30	6
6		7	4	3		2

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5107 का हल

3	2	5	6	4	7	1
4	33	4	40	7	31	2
7	2	6	3	5	1	4
1	29	3	37	6	35	5
2	1	7	4	3	5	6
6	30	2	24	1	30	3
5	6	1	4	2	3	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

सैन्य ताकत के बल पर साम्राज्य का विस्तार

मोहन। इसके अलावा उसने दक्षिण चीन सागर के 90 प्रतिशत इलाके पर अपना प्रादेशिक दावा स्थापित करने की चाल चली है। इस इलाके में वह मुद्री क्षेत्र और द्वीपों पर अपना दावा ठोक कर वियतनाम, मलयेशिया, फिलीपींस और जापान के साथ सैन्य तनाव पैदा करता रहा है।

श्रीलंका इसका एक उदाहरण है जहां चीन ने हम्बनटोटा बंदरगाह के विकास के लिए आठ अरब डॉलर का कर्ज दिया और नहीं चुकाने पर पूरा बंदरगाह 99 सालों के लिए अपने नाम लिखा लिया।आज के चीन को लग रहा है कि जिस तरह प्राचीन काल में उसने अपनी सैन्य ताकत के बल पर अपने साम्राज्य का विस्तार किया था, उसी तरह एक बार फिर नए सिरे से अपने प्रादेशिक इलाके का विस्तार करने का अभियान शुरू कर सकता है। चीन की रणनीति भारत पर कामयाब हुई तो उसके छोटे पड़ोसी और कई बड़े देश भी उससे डरेंगे और दुनिया का सत्ता संतुलन उसके पक्ष में झुकेगा।